ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 15 अंक 16 कुल पृष्ठ-4 15 से 21 अक्टूबर, 2020 दयानन्दाब्द 197 सृष्टि सम्वत् 1960853121 सम्वत् 2077 आ. कृ.-08

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान, यशस्वी आर्यनेता

श्री सत्यव्रत सामवेदी जी नहीं रहे

आर्य समाज आदर्शनगर, जयपुर (राजस्थान) में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, राजस्थान के पूर्व मंत्री श्री बृजकिशोर शर्मा, जस्टिस श्री पानाचन्द जैन, श्री रवि नैय्यर, श्री बलदेवराज आर्य सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने नम आँखों से अर्पित किये श्रद्धा सुमन

आर्य जगत के अथक योद्धा, कुशल संगठक, वेदों के मर्मज्ञ विद्वान् श्री सत्यव्रत सामवेदी जी का 10 अक्टूबर, 2020 (शनिवार) को जयपुर में निधन हो गया। वह 85 वर्ष के थे। श्री सामवेदी जी गत दो माह से यूरोलॉजी की व्याधियों से ग्रसित थे और बीते कुछ दिनों से काफी बीमार थे। निधन के समय वे अपने घर थे, क्योंकि दो सप्ताह अस्पताल में रखने बाद इलाज कर रहे चिकित्सकों ने उन्हें घर भेज दिया था।

श्री सत्यव्रत सामवेदी जी का 11 सितम्बर, 2020 (रविवार) को आर्य समाज आदर्शनगर के धर्माचार्य पं. जानकी प्रसाद शर्मा और पं. रामकुमार गौड़ ने पूर्ण वैदिक रीति से अंतिम संस्कार कराया, जिसमें सैकड़ों आर्य समाजी, निजी शिक्षण संस्थाओं के संचालक और जयपुर के गणमान्य लोग शामिल हुए और उनको अंतिम विदाई दी। उनके भतीजे श्री विकास आर्य और दोहित्र श्री कुशाग्र ने चिता को मुखाग्नि दी।

श्री सत्यव्रत सामवेदी जी का जीवन संघर्षों से परिपूर्ण रहा। गरीबों की मदद करना, सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आन्दोलन करना, भ्रष्टाचार से लड़ना उनकी विशेष गतिविधियाँ थीं। समाज में किसी भी तरह की कुरीतियाँ हों उनका मुखर विरोध करना और बिना भय के अपने पक्ष को रखना फिर चाहे उन पर प्राणघातक हमले ही क्यों न हो, वे पीछे नहीं हटते थे।

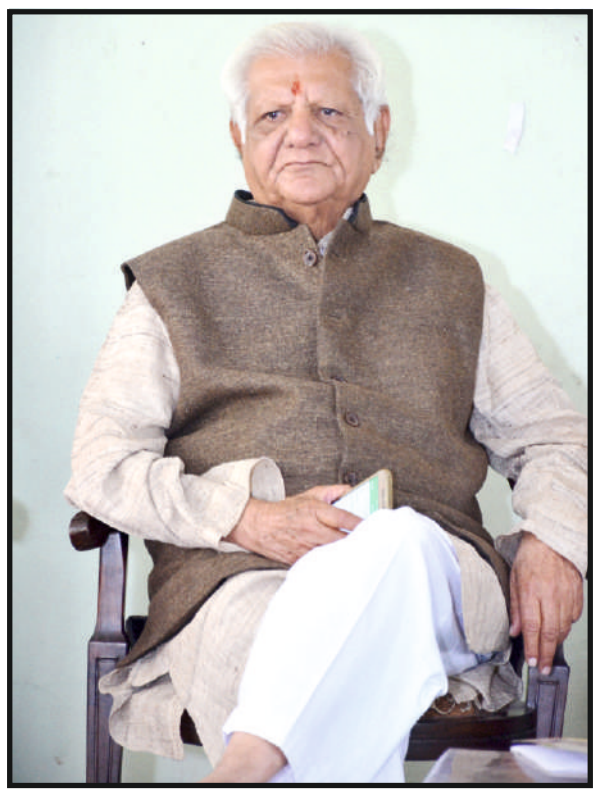

सती प्रथा के विरुद्ध दिल्ली से देवराला तक ऐतिहासिक पदयात्रा के दौरान श्री सत्यव्रत सामवेदी राजस्थान में यात्रा के संयोजक थे। उनके ऊपर सती प्रथा समर्थकों ने जानलेवा हमला करके उन्हें भारी चोटें मारी थीं जिससे वे और उनके साथी घायल हो गये थे, किन्तु उनका उत्साह किसी भी प्रकार से भी कम नहीं हुआ और यात्रा की व्यवस्था में वे जुटे रहे। यह ऐतिहासिक यात्रा क्रांतिकारी आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में निकाली गई थी जिसे राजस्थान के बॉर्डर से बांडी नदी तक सकुशल पहुँचाने, यात्रा के पड़ावों पर यात्रियों के भोजन एवं आवास की व्यवस्था करने, जनसभाएँ आयोजित करवाने आदि का दायित्व श्री सत्यव्रत सामवेदी जी के कंधों पर था, उन्होंने इस दायित्व को पूरी निष्ठा के साथ निभाया। यात्रा के अन्तिम तीन दिनों में जब इसका पड़ाव बांडी नदी पर हुआ था तब लगभग 500 लोगों के भोजन एवं आवास की तीन दिन तक पूरी व्यवस्था का दायित्व श्री सामवेदी जी एवं आर्य समाज

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

आर्य समाज आदर्शनगर, जयपुर (राजस्थान) में आयोजित श्रद्धांजलि सभा

आदर्शनगर जयपुर ने ही संभाला था। इस यात्रा के प्रभाव के परिणामस्वरूप देश में केन्द्र सरकार ने पहली बार सती प्रथा के विरुद्ध और उसकी महिमा मण्डन के विरुद्ध सख्त कानून बनाया। आर्य समाज की इस ऐतिहासिक उपलब्धि में श्री सामवेदी जी का बहुत बड़ा योगदान है। ठीक इसी प्रकार राजस्थान में शराबबन्दी आन्दोलन के श्री सामवेदी जी प्रतीक रहे। उन्होंने 1980 में 124 विधायकों के हस्ताक्षर कराकर प्रदेश के राज्यपाल और मुख्यमंत्री को ज्ञापन दिया और पूर्ण शराबबन्दी लागू करवाकर दिखाई। बाद में भी यह आन्दोलन उनके नेतृत्व में देर तक चलता रहा। राजस्थान के गैर–सरकारी शिक्षण संस्थानों के संगठन के वे सन् 1993 से अब तक सर्वमान्य अध्यक्ष रहे और सरकार को शिक्षा के क्षेत्र में अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए समय–समय पर आन्दोलन के द्वारा प्रभावित किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में नवम्बर, 2005 में महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के जन्मस्थान टंकारा से प्रारम्भ की गई कन्या भ्रूण हत्या, के विरुद्ध जन–चेतना यात्रा का राजस्थान में श्री सामवेदी जी ने न केवल संयोजन किया बल्कि इसकी व्यवस्थाओं में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज वही बेटी बचाओ अभियान पूरे देश में सभी धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक संगठनों का एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा बना हुआ है। श्री सत्यव्रत सामवेदी आर्य समाज आदर्शनगर और आर्य समाज से जुड़ी लगभग एक दर्जन शिक्षण संस्थाओं के न केवल अध्यक्ष रहे बल्कि उनके वे मुख्य कर्ता–धर्ता थे। वे आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान और मंत्री पद पर भी रहे और आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पहले मंत्री और बाद में कार्यकारी प्रधान भी बनें।

श्री सत्यव्रत सामवेदी जी की स्मृति में आयोजित श्रद्धांजलि सभा 13 अक्टूबर, 2020 को आर्य समाज आदर्शनगर, राजापार्क, जयपुर के सभागार में सम्पन्न हुई। इस सभा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, सभा के उपमंत्री श्री नित्यानन्द जी, सभा के अन्तरंग सदस्य और सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द जी, हरियाणा आर्य युवक परिषद् के पूर्व अध्यक्ष श्री रामनिवास जी, आगरा के आर्यनेता श्री रमाकान्त सारस्वत, वैदिक विद्वान हरिशरण जी अग्निहोत्री, घनश्यामधर त्रिपाठी, श्री कमलेश आर्य मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, श्री नन्द किशोर वैदिक, श्री नाथूलाल शर्मा, श्री रवि नैय्यर, श्री बलदेव राज आर्य, सेवानिवृत्त हाईकोर्ट के जज श्री पानाचन्द जैन, राजस्थान सरकार के पूर्व मंत्री श्री बृज किशोर आदि के अतिरिक्त अनेक गणमान्य महानुभावों ने भाग लिया। श्रद्धांजलि सभा का संयोजन धर्माचार्य श्री जानकी प्रसाद शर्मा ने किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने श्री सामवेदी जी के जीवन की मुख्य घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि श्री सामवेदी जी एक ओजस्वी वक्ता, प्रखर लेखक, उच्चकोटि के साहित्यकार, मर्मज्ञ मनीषी और कर्मठ आर्यनेता थे। उनकी भाषणशैली अत्यन्त प्रभावशाली थी। श्रोताओं विशेषकर युवाओं की धमनियों में उनके जोशीले भाषण को सुनकर खून दौड़ने लगता था। वे अपने व्याख्यानों में क्रांतिकारियों के संस्मरण अवश्य सुनाते थे ताकि युवकों को उनके जीवन से प्रेरणा मिल सके। श्री सामवेदी जी की वक्तृत्वकला से अनेक संगठनों के लोग प्रभावित थे और उन्हें अपने मंचों पर बुलाकर वे लाभ उठाते थे। हमें याद है कि जब देश के उपराष्ट्रपति और राजस्थान के नेता श्री भैरव सिंह शेखावत की श्रद्धांजलि सभा जयपुर में आयोजित हुई थी जिसमें प्रदेश के राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्रिमण्डल के समस्त सदस्य, हाईकोर्ट के सभी जज और महत्त्वपूर्ण अधिकारी और जयपुर के नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित थे, उस समय विशेष रूप से आग्रह करके श्री सामवेदी जी का जीवन और मृत्यु के विषय पर प्रभावशाली, सारगर्भित व्याख्यान कराया गया था। उस व्याख्यान से प्रभावित होकर सभी श्रोता अत्यन्त प्रभावित हुए और उनकी वक्तृत्वकला की मुक्तकंठ से प्रशंसा की गई। आर्य समाज के बड़े–बड़े सम्मेलनों में श्री सामवेदी जी का व्याख्यान हजारों लोग एकाग्रचित होकर सुनते थे। श्री सामवेदी जी को ये गुण बचपन से ही अपने पूज्य पिता जी से मिले। उनके पूज्य पिता पं. जयदेव वेदालंकार गुरुकुल कांगड़ी के तेजस्वी स्नातक एवं आचार्य थे और वे भी एक प्रभावशाली वक्ता थे। उन्हीं के दिये संस्कार श्री सत्यव्रत सामवेदी जी को जीवनभर प्रेरित करते रहे। श्री सामवेदी जी एक संघर्षशील योद्धा के रूप में याद किये जायेंगे। उन्होंने भ्रष्टाचार, नशाखोरी, जातिवाद, महिला उत्पीड़न, पाखण्ड के खिलाफ मुखर होकर आन्दोलन किये और युद्ध का बिगुल बजाया। श्री सामवेदी जी देश के किसानों, मजदूरों, महिलाओं तथा नौजवानों के लिए विशेष आवाज उठाया करते थे। उनका यह मानना था कि जब तक देश के किसान और नौजवान के साथ आर्य समाज खड़ा नहीं होगा तब तक आर्य समाज अपना उद्देश्य प्राप्त नहीं कर सकता। वे सम्पूर्ण क्रांति के समर्थक थे।

स्वामी जी ने कहा कि सन् 1974–1975 में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई थी। वे संकीर्ण विचारधारा के नहीं थे, बल्कि मानवमात्र के उत्थान के लिए वे संघर्षरत् रहे। उनके निधन से आर्य जगत् की अपूर्णीय क्षति हुई है। पूरे राजस्थान में इस समय श्री सामवेदी जी के रिक्त स्थान को भरने के लिए कोई आर्य नेता दिखाई नहीं देता। स्वामी आर्यवेश जी ने जहाँ श्री सामवेदी जी को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की वहीं परिवार के

अगले पृष्ठ पर जारी

राजस्थान के राज्यपाल, मुख्यमंत्री, स्वास्थ्यमंत्री, पूर्व लोकपाल तथा अन्य गणमान्य महानुभावों द्वारा दी गई श्रद्धांजलियाँ

राजस्थान के राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने श्री सामवेदी जी को एक पत्र के द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा है कि श्री सामवेदी जी एक उच्चकोटि के समाजसेवी थे। उनके जाने से समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है।

राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने श्री सामवेदी जी के देहावसान पर गहरा दुःख प्रकट किया।

राजस्थान के सूचना एवं जनसम्पर्क तथा चिकित्सा मंत्री डा. रघु शर्मा ने विख्यात समाजसेवी सत्यव्रत सामवेदी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया। डा. शर्मा ने कहा कि स्व. सामवेदी जी ने आर्य समाज से जुड़कर आजीवन समाज सेवा का कार्य किया। उन्होंने कहा कि वे उत्कृष्ट वक्ता धार्मिक प्रवृत्ति और मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने पत्रकारिता, साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान दिया। उनका निधन न केवल परिवार अपितु समाज की अपूर्णीय क्षति है।

राजस्थान के पूर्व लोकायुक्त श्री सज्जन सिंह कोठारी ने स्वामी आर्यवेश जी को दूरभाष पर श्री सामवेदी जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि सामवेदी जी का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली एवं तेजस्वी था। उनके निधन से समाज की बहुत बड़ी हानि हुई है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व वरिष्ठ उपप्रधान श्री आनन्द कुमार टाण्डा ने दूरभाष पर सामवेदी जी के निधन को अपनी व्यक्तिगत एवं समाज की हानि बताते हुए दुःख प्रकट किया।

श्री विश्रुत आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका, श्री आर.एस. तोमर एडवोकेट प्रधान सार्वदेशिक न्याय सभा, स्वामी रामवेश जी प्रधान नशाबन्दी परिषद् हरियाणा, प्रो. विट्ठलराव आर्य मंत्री सार्वदेशिक सभा एवं प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना, पं. माया प्रकाश त्यागी कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा, स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती गुरुकुल गौतमनगर जी, श्री विनय आर्य मंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री मधुर प्रकाश उपमंत्री सार्वदेशिक सभा, श्री हरि सिंह सैनी पूर्वमंत्री हरियाणा सरकार एवं प्रधान आर्य समाज हिसार, उपमंत्री सार्वदेशिक सभा श्री राम सिंह आर्य, श्री भंवर लाल आर्य अधिष्ठाता आर्य वीरदल, श्री दलपत सिंह आर्य जालौर, श्री हरदेव सिंह आर्य शिवगंज, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा, बहन प्रवेश आर्या एवं बहन पूनम आर्या बेटी बचाओ अभियान, स्वामी सच्चिदानन्द जी यमुनानगर, श्री अनिल आर्य उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, श्री प्रेमपाल शास्त्री उपप्रधान सार्वदेशिक सभा एवं अध्यक्ष आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के अतिरिक्त अन्य अनेक संस्थाओं के पदाधिकारियों ने अपनी श्रद्धांजलियाँ भेजी है।

श्री सत्यव्रत सामवेदी जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

पारिवारिक पृष्ठ भूमि– गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के यशस्वी एवं सर्वाधिक ओजस्वी वक्ता, स्वतंत्रता सेनानी तथा महात्मा गांधी के साथी पंडित जयदेव वेदालंकार के सुपुत्र श्री सत्यव्रत सामवेदी का जन्म 26 दिसम्बर, 1935 में मुल्तान के क्षत्रिय परिवार में हुआ। श्री सत्यव्रत सामवेदी छह भाई–बहनों में सबसे बड़े थे। उनके पिता पं. जयदेव मुल्तान गुरुकुल के आचार्य थे। पंडित जयदेव स्वतंत्रता संग्राम में कई वर्ष कारावास में रहे। माताजी ने अध्यापिका का कार्य करके संतानों का पालन पोषण किया। पंडित जी को सहारनपुर का महात्मा गांधी कहा जाता था। पंडित जी ने वारंगल (हैदराबाद) में कई आर्य समाजों की स्थापना की जिसके कारण उन पर मुसलमानों द्वारा कई प्राणघातक आक्रमण हुए।

सामवेदी जी की प्रारंभिक शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी में हुई। दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.ए. ऑनर्स और एम.ए. हिन्दी साहित्य में किया। पंजाब विश्वविद्यालय से बी.एड., राजस्थान विश्वविद्यालय से इतिहास में एम.ए. तथा विधि स्नातक भी थे श्री सामवेदी जी।

सन् 1975 से स्वतंत्रता सेनानी श्री छोटू सिंह (पूर्व विधायक) के साथ आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान का कार्य किया और दो शताब्दी समारोहों के आयोजन में मुख्य भूमिका रही। अनेक बार आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के महामंत्री और अध्यक्ष रहे। सन् 2002 में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री एवं 2005 से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान के पद को सुशोभित किया।

श्री सामवेदी जी विद्या समिति एवं शिक्षा समिति द्वारा संचालित स्नातकोत्तर महाविद्यालयों, दो उच्च माध्यमिक विद्यालयों, शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय एवं विधि महाविद्यालय के अध्यक्ष भी रहे।

राजस्थान के गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं के 1993 से अध्यक्ष रहे एवं राजस्थान गैर सरकारी शैक्षिक अधिनियम 89 एवं नियम 93 तथा इसके बाद राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधिपति शिवकुमार शर्मा की अध्यक्षता में गठित फीस कमेटी को राजस्थान उच्च न्यायालय से भंग करवाया और 1993 से गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं के लिए संघर्षरत रहे।

1960 से शराबबंदी के लिए अनेक प्रदर्शन किये एवं 1980 में 124 विधायकों के हस्ताक्षर कराके राजस्थान में पूर्ण शराबबंदी कराई। लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा गठित लोक समिति के अध्यक्ष भी रहे। जॉर्डन एवं ऑस्ट्रिया की राजधानी वियना में विश्व धर्म सम्मेलन में

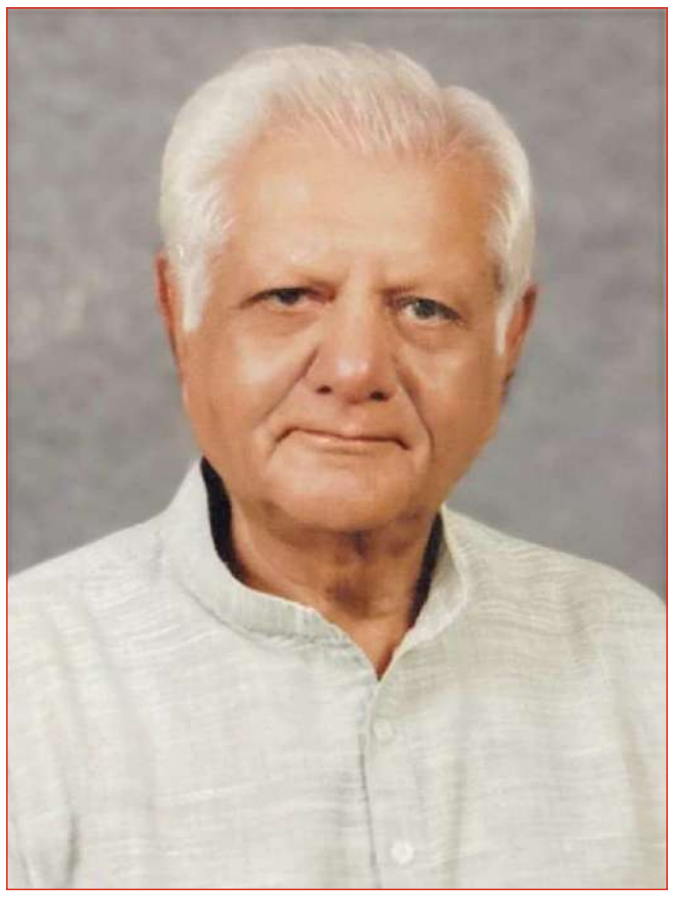

भाग लिया। राजस्थान में सती प्रथा के विरोध में जबर्दस्त आंदोलन किया, जहाँ उन पर मरणांतक हमला हुआ जिसमें वे बाल–बाल बचे। अन्ततोगत्वा पूर्ण सफलता प्राप्त की।

भारतवर्ष की दूसरी काशी माने जाने वाले जयपुर में पौराणिक महंत, राजनेता एवं भारतीय प्रशासनिक अधिकारी वैदिक साहित्य एवं गीता तथा आर्ष ग्रन्थों पर सामवेदी जी के भाषणों का आयोजन करते थे और देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से लेकर प्रत्येक प्रांत के राज्यपाल, मुख्यमंत्री एवं मंत्री सामवेदी जी का भाषण सुनकर महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के प्रशंसक हो गए हैं।

श्री सामवेदी जी के नेतृत्व में राजस्थान के अंदर सामाजिक आंदोलनों का केन्द्र रहा आर्य समाज, आदर्श नगर बना रहा। यह अग्नि निरंतर प्रज्ज्वलित है। श्री सत्यव्रत सामवेदी ने अपने ओजस्वी भाषण देकर लोगों को आकर्षित किया और सामाजिक कुरीतियों पर वार कर समाज को एक संदेश दिया और जीवन पर्यन्त उस संदेश को खुद ने अपने जीवन में उतारा। उनके सम्पर्क में जो भी व्यक्ति आया वो उनका हो कर रह गया चाहे वह आर्य समाज से सम्बन्धित रहा हो या समाज की किसी भी अन्य धारा से सम्बन्धित रहा हो, चाहे सिख समाज हो, चाहे मुस्लिम समाज हो सारे समाजों में उनका एक बराबर सम्मान था और सब उनको ध्यान से सुनते थे और मानते थे। उनकी एक विशेषता थी कि अपने विरोधियों को भी अपने पक्ष में मिला लेते थे और समाज को साथ में लेकर चलने की आदत से उनकी एक विशिष्ट पहचान थी।

सामवेदी जी के गीता पाठ के प्रशंसकों में राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री व देश के उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत सभी को प्रेरित करते रहते थे कि यदि गीता पाठ सुनना है तो सत्यव्रत सामवेदी जी के मुखारबिन्द से सुना जाए। इसके अलावा राजस्थान व राजस्थान के बाहर भी भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी व राजनेता उनसे गीता पाठ का निरंतर अनुरोध करते रहे और सभी जगह उन्हें बड़ी आत्मीयता और एकाग्रचित से सुना जाता था। सामवेदी जी की एक खासियत थी कि सुख–दुख में बिना किसी के बोले हमेशा शामिल होते थे और राजी–खुशी पूछने के लिए परिवारों से सम्पर्क करते थे और परिवार की महत्ता को समझाते थे। सभी समाजों को आपस में जोड़े रहते थे।

आर्य समाज से सम्बद्ध सभी शैक्षणिक संस्थाओं की छात्राओं और अध्यापिकाओं में नैतिकता और चरित्रवान बनने के गुणों को बढ़ाने और यथाशक्ति समाज को कुछ न कुछ देने की इच्छा को बराबर प्रेरित करते रहते थे। अपने भाषणों में लगातार महिलाओं के उत्थान, विकास और उनकी महत्वता को हमेशा दर्शाते थे कि महिलाओं का समाज और परिवार में क्या महत्व है।

सामवेदी जी जिन संस्कारों की बात अपने भाषणों और प्रवचनों में निरंतर करते रहे वो संस्कार उन्हें अपनी माता भगवान देवी और पिता पं. जयदेव वेदालंकार से मिले। वह एक ऐसा परिवार था जिसने अपना पूरा जीवन आर्य समाज और महिला शिक्षा को समर्पित कर रखा था और कई सामाजिक आंदोलनों में प्रमुख रूप से उनका प्रतिनिधित्व रहा। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान पं. जयदेव जी जब जेल में जाते थे तो उनकी पत्नी अपने छह पुत्र–पुत्रियों के पूरे परिवार को बांधे रखती और निरंतर अच्छे संस्कारों से प्रेरित करती रहीं श्री सामेवदी जी स्वयं में एक आन्दोलन थे यह कहा जाये तो कोई अतिश्योंक्ति नहीं होगा।

पृष्ठ 2 का शेष

आर्य समाज आदर्शनगर, जयपुर (राजस्थान) में आयोजित श्रद्धांजलि सभा

सदस्यों को अपनी ओर से सान्त्वना भी दी। उन्होंने आर्य समाज के सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को प्रेरित किया कि वे श्री सामवेदी जी के अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए कृतसंकल्पित हों। स्वामी आर्यवेश जी ने श्री सामवेदी जी की धर्मपत्नी आदरणीया माता श्रीमती मृदुला सामवेदी जी का ढांढस बंधाते हुए कहा कि सामवेदी जी के समस्त क्रियाकलापों एवं उपलब्धियों में माता मृदुला जी का सबसे अधिक योगदान है। यदि वे उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर नहीं चलतीं या हर स्थिति में उनके साथ खड़ी नहीं रहती तो वे इतना अधिक यश प्राप्त नहीं कर सकते थे। माता जी ने सामवेदी जी के साथ न केवल सामाजिक कार्यों में बढ़–चढ़कर सहयोग किया बल्कि उनके अस्वस्थ हो जाने पर भी उनकी सेवा में वे अन्ति श्वांस तक प्राण–पण से जुटी रहीं। सही अर्थों में उन्होंने अपने पत्नी व्रत धर्म का पालन करके सामवेदी जी को अन्तिम समय तक संभाला। अब उन्हें श्री सामवेदी जी के अधूरे कार्यों को पूरा करवाने के लिए आर्य समाज की पूरी टीम को अपना आशीर्वाद देना है। ईश्वर उन्हें स्वस्थ रखें जिससे वे आर्य समाज के कार्यों में अपना आशीर्वाद देती रहें। इस अवसर पर माता मृदुला सामवेदी जी के अतिरिक्त उनकी पुत्रवधु श्रीमती शालिनी, उनकी पौत्री वरदा और मेधा, उनकी बेटी

श्रीमती ऋतम्भरा, दोहित्र कुशाग्र एवं निपुण तथा उनके दामाद श्री ए.टी. श्रीनिवासन तथा उनके भाई श्री सत्येन्द्र एवं भतीजे श्री विकास आर्य को भी स्वामी जी ने सान्त्वना दी। इस अवसर पर श्री रवि नैय्यर, श्री बलदेवराज आर्य, श्री राजेश भटनागर आदि ने भी सामवेदी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। परिवार की ओर से उनके दामाद श्री ए.टी. श्रीनिवासन ने धन्यवाद ज्ञापित किया और श्री सामवेदी जी की विशेष सेवा करने के फलस्वरूप श्री देवेन्द्र सिंह त्यागी तथा श्री महिपाल सिंह जी का विशेष रूप से आभार व्यक्त किया।

श्री सत्यव्रत सामवेदी जी की जीवन यात्रा के कुछ दृश्य

स्वामी अग्निवेश के अंदर डर नहीं था किसी का भी

– डॉ. राजेंद्र सिंह

11 सितम्बर को स्वामी अग्निवेश का दिल्ली के एक अस्पताल में निधन हो गया। यह एक अपूर्णीय क्षति है। स्वामी अग्निवेश क्रांतिकारी आध्यात्मिक पुरुष थे, उन्होंने गरीबों के लिए, बच्चों के लिए निशक्त निस्सहायों के लिए अधिकार दिलाने के लिए हमेशा लड़ाई लड़ी। मैं उनको 1978 से जानता हूं और 1980 में हमारी और उनकी मुलाकात हुई। क्योंकि जब मैं बड़ौत में पढ़ता था, कॉलेज में तो उन दिनों ये जो ईंट भट्ठे होते हैं उनके कारण जो आम के बाग थे वो फलने बंद हो गए थे वो खराब हो जाते थे, और ईंट भट्ठों पर तो बंधुआ मजदूर थे। वो एक समस्या थी और मेरे सामने बागों का खराब होना भी समस्या थी। तो इस सिलसिले में हमारी एक मुलाकात दिल्ली में हुई और हमने उनसे कहा कि हमारे इलाके के सारे आम के बाग खराब हो रहे हैं । तो उन्होंने कहा वहां उस इलाके में जो मजदूर काम करते है उनमें बहुत सारे मजदूर बंधुआ मजदूर की तरह ही काम करते हैं और वे उनके लिए काम करना चाहते है । तो फिर इस तरह से एक साथ दिल्ली से लेकर बड़ौत तक जितने ईट भट्ठे थे उन पर जो मजदूर काम करते थे उनकी हालत बहुत खराब थी उस पर उन्होंने काम शुरू किया। मैं ये जानता हूं कि स्वामी जी रहते थे साधु की वेशभूषा में और उनके अंदर की आत्मा हमेशा गरीबों की पक्षधर थी। वे गरीबों को सहारा देते थे और उनका अध्यात्म कहता था कि जीवन के सारे जीवों का सम्मान करना ही बहुत बड़ा तीर्थ है। जीवों के लिए उनके मन में बहुत जगह थी।

बाद के दिनों में वह तरुण भारत संघ में आए, और तरुण भारत संघ में 1995 में अरवरी नदी बहने लगी थी वो भी उन्होंने देखा और हमारे सारे काम को भी उन्होंने बहुत अच्छे से देखा समझा। उनके साथ हमारे मतभेद तो बहुत होते थे क्योंकि हम अलग तरह से सोचते और काम करते थे और वो अलग तरह से सोचते और काम करते थे लेकिन उनके अंदर निशक्त निस्सहाय और साथ ही साथ प्रकृति के प्रति जो सम्मान था वो दिन प्रतिदिन बाद के दिनों में काफी गहरा और बढ़ता गया। मुझे ठीक से याद आ रहा है कि वर्ष 2000 में जब हमारे यहां राष्ट्रपति आए तो उन्होंने कहा कि ' तुम्हारा काम तो पूरी दुनिया में जाना माना जाता है लेकिन इसमें आध्यात्मिकता क्या है? तो मैंने उन्हें अपनी छोटी सी पुस्तक उस पुस्तक का नाम था " भारतीय आस्था एवं पर्यावरण रक्षा" दृ ये किताब बहुत छोटी है कुल 40–42 पेज की पुस्तक हल्की सी और हिंदी अंग्रेजी दोनों में है, तो मैंने दोनों उन्हें दी। उन्होंने 10–12 दिन पढ़ने के बाद कहा कि तुमने बहुत गहरी पुस्तक लिखी है। इसमें भारतीय आस्था को, और ये आस्था है ये ना केवल हिन्दू की बल्कि सबकी है, तो ये जिस आस्था के बारे में तुमने लिखा है ये तो भारतीय आस्था है, वैदिक काल की आस्था है और तुम जिसे भगवान कहते हो मैं भी उसे भगवान को मानता हूं।

मेरे लिए तो भगवान ये पांच महाभूत ही हैं जिनसे हम निर्मित हुए हैं। और फिर मैंने उन्हें मेरी जो भगवान के परिभाषा है वो बोलना शुरू किया भ से भूमि, ग से गगन, व से वायु, अ से अग्नि और न से नीर। ये जो पंच अक्षरा पंच महाभूत है वहीं हमारा भगवान है बस ये सुनकर वो बहुत ही खुश हो गए और आनंदित हो गए और कहने लगे मुझे बहुत अच्छा लग रहा है राजेंद्र तुम्हारे साथ बात करके। पहले तो मुझे तुम्हारे साथ तुम्हारे वैचारिक रूप से उतनी सहमति नहीं होती थी लेकिन अभी मुझे लग रहा है कि तुम तो उसी चिंतन से काम कर रहे हो जो हमारा चिंतन है। आर्य समाज और फिर उन सबकी व्याख्या करते हुए बहुत गहराई से उन्होंने कहा कि आर्य समाज जो आज की जरूरत है, जो आधुनिक जरूरत है ,जो परिपेक्ष्य में प्रकृति को और पंच महाभूतों को देखने का नजरिया है। और फिर उन्होंने सत्यार्थप्रकाश का हवाला देते हुए कहा कि तुमने तो बिल्कुल अलग पक्ष रखा है। क्रिएटिव, पॉजिटिव पक्ष रखा है इस "भारतीय आस्था एवं पर्यावरण रक्षा" में और ये एक तरह से तो हमारी वैदिक परंपरा है।

पानी को वरूण देवता और पूरी प्रकृति को एक तरह से जीवन का आधार मानना और उसी के प्रति हमारा प्रेम, सम्मान, आस्था, श्रद्धा, भक्ति भाव जिस तरीके से जिस तरह से तुमने इस पुस्तक को सृजित किया है, ये पुस्तक तो सबके काम की है।

उस पुस्तक के बाद तो वे बार बार फिर तो तरुण भारत में बहुत आने लगे थे। वर्ष 2000 के बाद उन्होंने मुझसे कई बार कहा कि तुम वही काम कर रहे हो जो हम करना चाहते है। तुमने धरती पर नदियों को पुनर्जीवित किया और प्रकृति को पुनर्जीवित किया हम लोग तो केवल गरीबों के अधिकारों के लिए निशक्त निस्सहाय लोगों के अधिकारों के लिए लड़ते रहे जीवन भर।

उनके मन में बहुत स्पष्टता रहती थी। वो कभी भी घुमा कर बात नहीं करते थे। सीधी बात करते थे किसी को अच्छी लगे बुरी लगे किसी को चुभे ना चुभे। पर मैंने देखा कि वो बहुत घुमाकर बात नहीं करते थे। कम से कम मेरे

साथ तो नहीं। मेरे साथ वो सीधी सी भाषा में बात करते थे। इससे मुझे लगता था वह एक ऐसा व्यक्ति है जो कभी किसी से डरता नहीं है। स्वामी अग्निवेश के अंदर डर नहीं था किसी का भी। चाहे कोई उन्हें कुछ भी कहे। मैंने उनसे पूछा कि स्वामी जी आपका जो व्यवहार है वो तो एकदम क्रांतिकारी है, और क्रान्ति भी एकदम अहिंसा और सत्य से जुड़ी जो गांधी का रास्ता है वो। लेकिन आपने फिर यह लाल कपड़े क्यों पहने है। आपको क्या जरूरत थी ये लाल कपड़े पहनने की। तो कहने लगे कि इनसे क्या बिगड़ जाता है? मैं यदि इनको ना पहनूं तो क्या होगा? मैंने कुछ जवाब नहीं दिया फिर वो अपने आप अपनी व्याख्या करने लगे कि देखो मेरा जीवन आर्य समाज में पला बड़ा हुआ और मैंने उसकी पालना की। फिर मैं ये भी बताना चाहता हूं कि ये लाल कपड़े पहनने से कोई व्यक्ति किसी एक समूह के साथ बंध जाएगा या एक छोटे ग्रुप के साथ बंध जाएगा ऐसा नहीं है। हम ये साधुओं के कपड़े पहन कर भी पूरी दुनिया से एक हो कर बात कर सकते है। तो उस तरीके से उन्होंने उनका जो देखने का नजरिया था दुनिया के बारे में, देश के बारे में, समाज के बारे में, उस नजरिए पर वो कोई समझौता नहीं करते थे। वो किसी को अच्छा लगे बुरा लगे वो सीधी सटीक बात है उसे कहने में कदाचित संकोच नहीं करते थे। उसी के कारण हम लोग आखिर के दिनों में बहुत मिलने लगे थे, बातचीत करने लगे थे।

90 के दशक में हमारे और उनके बहुत मतभेद थे। किन्हीं कारणों से उनको ये पानी का काम क्रांतिकारी काम नहीं दिखता था। जो मैं करता हूं, जो मैं प्रकृति के संरक्षण का जंगलों के संरक्षण का काम करता हूं ,उनको लगता था कि मैं ऐसा काम कर रहा हूं जिससे समाज को, गरीब को, निशक्त को न्याय नहीं मिलता। तो इस कारण मुझे लगता है हमारा और उनका बीच के दिनों में बहुत बोलचाल नहीं थी लेकिन आखिर के दिनों में जब वो बीमार थे, जैसे ही बीमार हुए तो मैंने उनको फोन करके पूछा। उनको मिल नहीं पाया लेकिन जब मानव (स्वामी अग्निवेश के सहयोगी) ने मुझे जब ये बताया तो मैं स्तब्ध रह गया कि ये जो किडनी का रोग उन्हें कैसे हो गया वो तो बिल्कुल स्वस्थ दिखते थे।

स्वामी जी के साथ बाद के दिनों में मेरा सबसे गहरा रिश्ता हुआ। वो यह मानते थे कि पानी जो है वह सब का है यह किसी की प्रॉपर्टी नहीं हो सकता। ये पानी बाजार की चीज नहीं हो सकता और वो इस बात को बिल्कुल गहराई से मानते थे कि जो जल है वह मानवाधिकार है। जल जीवन के लिए, सबके लिए मिलना चाहिए। इसके लिए इस पर हमारी बहुत पहले से ही एक मित्रता थी और फिर इसी विचार के कारण हमारे उनके रिश्ते और गहरे होते चले गए। फिर उनको भी ये समझ आने लगा था कि मानवता और प्रकृति दोनों बराबर ही है। यदि प्रकृति का वास होगा तो गरीब निशक्त निस्सहाय को ही इसका फायदा होगा। इसी कारण वो तरुण भारत संघ को एक तरह से बहुत प्यार करने लगे। बिहार में भी हम लोगों ने कई बार यात्रायें की। साथ में राजस्थान की यात्रा की।

तो एक तरह से स्वामी अग्निवेश अन्याय और अत्याचार के खिलाफ निर्भय होकर, निडर होकर, एक अनुशासित सन्यासी की तरह जीवन भर लड़ते रहे। इसी के कारण उनको बहुत सारे लोगों का गुस्सा और क्रोध भी झेलना पड़ा। उनके जाने का मुझे बहुत दुख है। उसका एक बड़ा कारण यह है कि वो एक ऐसे इंसान थे जो सत्य को बोलने से नहीं झिझकते थे और जितना मैं उनको जानता हूं, मेरे साथ तो वह अहिंसा से आंदोलन करने में ही वह आगे रहते थे। बापू के जीवन में सत्य भगवान है और अहिंसा जीवन जीने के लिए जरूरी है। इसकी वो पालना करते थे और शायद इसी विचार के कारण बाद के दिनों में भी प्रकृति खासकर पानी के प्रति प्यार बढ़ गया था। इस काम को वो बहुत चाहने लगे थे इसलिए मैं उनके जाने पर बहुत दुखी हूं और यह मानता हूं कि उनको और जीना चाहिए था। वो जीते तो इस देश के भले के लिए इस देश में अन्याय अत्याचार के खिलाफ सत्याग्रह को बढ़ावा देने के काम में आगे बढ़ते।

भले ही वो बापू का अपने भाषणों में ज्यादा नाम नहीं लेते थे पर मैं उनके काम को एक तरह से ये मानता हूं कि अन्याय और अत्याचार के खिलाफ कमजोर से कमजोर व्यक्ति को खड़ा करने की कला उनके अंदर थी। और निशक्त निस्सहाय को शक्तिशाली बनाने का उनके मन में बहुत विश्वास था।

इसलिए कभी कभी जैसे पांच सितारा होटल में मजदूरों को घुसा कर उन्हें वहां भोजन कराने का, उनके बड़े समाज को लेकर आने का। असमता, असमानता, असहाय और अत्याचार को रोकने के लिए वो किसी भी तरह आगे आने की कोशिश करते थे। मैं उनके जाने पर बस इतना ही कहना चाहता हूं कि जल के निजीकरण को रोकने कि लिए और नदी जोड़ कि योजना के बारे में उनकी बड़ी स्पष्ट राय थी। वो बड़े बांधो के खिलाफ और नदी जोड़ जैसे कामों के विरूद्ध थे। इस सब के चलते मेरा उनके साथ जो एक वैचारिक एकजुटता थी उस वैचारिक एकजुटता में मेरा विचार है कि उनका ऐसे वक्त में ज्यादा जीवन जीना सबके लिए, भारत और पूरी दुनिया के लिए अच्छा होता।

–'लेखक जलपुरुष के नाम से विख्यात, मैग्सेसे और स्टॉकहोल्म वॉटर प्राइज से सम्मानित, पर्यावरणविद हैं।

आर्य समाज शकरपुर के प्रधान श्री ओम प्रकाश रूहिल की ज्येष्ठ पुत्रवधु

श्रीमती गीता रूहिल का असामयिक देहावसान

आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली–110092 के प्रधान श्री ओम प्रकाश रूहिल जी की ज्येष्ठ पुत्रवधु श्रीमती गीता रूहिल का दिनांक 5 अक्टूबर, 2020 को असमय निधन हो गया, वे 48 वर्ष की थीं। उनका अन्तिम संस्कार उसी दिन गीता कालोनी श्मशान घाट पर श्री सत्येन्द्र शास्त्री जी द्वारा पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। श्री रूहिल जी का परिवार आर्य सिद्धान्तों से ओत–प्रोत है और आर्य समाज शकरपुर के प्रत्येक कार्य में समर्पित होकर कार्य करते हैं तथा सहयोग करते हैं। उनके निधन से आर्य समाज शकरपुर के पदाधिकारी एवं सदस्यगण अत्यन्त शोकाकुल हैं तथा परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की शांति एवं सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

– राकेश शर्मा, मंत्री

स्वामी अग्निवेश जी की स्मृति में श्रद्धांजलि सभाएँ एवं पारित शोक प्रस्ताव

देवीदास केवलकृष्ण चैरीटेबल ट्रस्ट, मोंगा, पंजाब द्वारा पारित शोक प्रस्ताव

पूज्य स्वामी अग्निवेश जी अब इस दुनिया में नहीं रहे सुनते ही पैरों तले मानो जमीन खिसक गई। अपार दुख हुआ। आकाश बता क्या बात हुई आर्य जगत पर एक के बाद एक आफत के पहाड़ टूट रहे हैं हम सभी स्वामी अग्निवेश जी के दुखदाई देहावसान पर अचंभित हैं। यूं ही नहीं आती खूबसूरती इन्द्रधनुष में, अलग–अलग रंगों को एक होना पड़ता है। आर्य जगत के विद्वान्, मुनि, तपस्वी, मृदुभाषी, करुणा की मूर्ति, श्रद्धा के योग्य सरल एवं सु मधुर स्वभाव के धनी, मानवता के पुजारी स्वामी अग्निवेश जी अब हमारे बीच नहीं रहे। श्रद्धेय स्वामी जी के साथ हमारा परिचय बहुत पुराना है। मोगा वाले पुरी परिवार के श्री देवी दास जी पुरी एवं माता राजरानी जी पुरी व श्री केवल कृष्ण जी पुरी के साथ आपका बड़ा लगाव था। अब उनकी पुत्रवधु श्रीमती इंदु पुरी जी व इनके सुपुत्र श्री विवेक पुरी जी भी आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं। आप यहां रहकर अनेक धर्म चर्चाएं करते थे। हमें अपना बड़ा ही स्नेह आशीष देते रहते थे। श्रद्धेय स्वामी जी ने जीवन भर आर्य जगत को अपनी सेवाएं प्रदान की हैं। आर्य जगत उनका चिर ऋणी रहेगा। स्वामी जी क्रांतिकारी व्यक्तित्व रखते थे। आप देश–विदेश के करोड़ों लोगों के दिलों में बसे हुए हैं। आप आर्य जगत के एकमात्र ऐसे संन्यासी थे जिन्होंने भारत देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी आर्य समाज, सत्यार्थ प्रकाश और वेदों का प्रचार कर अपनी एक सफल पहचान बनाई थी। आप देश के सभी सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक क्षेत्रों में होने वाली हर प्रकार की वेद विरुद्ध और नकारात्मक गतिविधियों का पुरजोर विरोध कर अपना सत्य और निष्पक्ष वक्तव्य देकर सभी को सत्य का अनुकरण करने के लिए प्रेरित करते थे। वे आर्य जगत की आन बान और शान थे। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के धर्मसभा के विशेष कार्यक्रमों में आर्य समाज के प्रतिनिधि के रूप में उन्हें ही आमंत्रित कर सम्मानित किया जाता था। राष्ट्र और धर्म के प्रति समर्पित उनके योगदान, उपलब्धियों, प्रसिद्धि को देखकर भ्रष्ट राजनीति से प्रेरित और ईर्ष्या व द्वेष से ग्रस्त कथित आर्यों और हिन्दूवादी कट्रपंथियों द्वारा उन पर मिथ्या दोषारोपण कर उन्हें बदनाम करने का असफल कुत्सित प्रयास किया जाता रहा है।

लेकिन परमात्मा की कृपा से वे सदैव प्रदीप्त्यमान सूर्य की भांति सभी जगह अपने सत्य का प्रकाश फैलाते रहे। स्वामी अग्निवेश जी ने अपने संघर्षमयी जीवन में समाज और राष्ट्र में सकारात्मक परिवर्तन लाने हेतु अपना अमूल्य योगदान दिया है। उनके योगदान को कोई भी सत्यनिष्ठ, धर्मनिष्ठ व्यक्ति भुला नहीं सकता।

अदम्य साहसी, प्रभावशाली प्रखर प्रवक्ता, सच्चे समर्पित ऋषिभक्त, ईश्वरभक्त, राष्ट्रभक्त, बंधुआ मजदूरी, सती प्रथा शराबखोरी के विरुद्ध सफल अभियान चलाने, गौहत्या पर प्रतिबन्ध के लिए आवाज बुलन्द करने वाले और विश्व बंधुत्व का मानवतावादी संदेश देने वाले आर्य जगत के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त क्रांतिकारी आर्य संन्यासी श्रद्धेय स्वामी अग्निवेश जी को बारम्बार नमन है। आपने आध्यात्मिक सामाजिक कार्यों में समाज को समय–समय पर मार्गदर्शन दिया। आपने देशभर में वैदिक सभ्यता संस्कृति का परचम लहराया। स्वामी जी अंधेरे जीवनों के लिए प्रकाश स्तम्भ थे। हम देवी दास केवल कृष्ण चैरीटेबल ट्रस्ट की ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। हमारे साथ उनका लगाव अत्यधिक था। कई आयोजनों पर भी आप पधारे थे। ऐसे आत्मीय भावों से मिलना जैसे पारिवारिक सदस्य होते हैं। परमपिता परमात्म से प्रार्थना है कि दिवंगत पुण्य आत्मा को उत्तम नवजीवन रूप सद्गति व शोक संतप्त आश्रम परिवार एवं बंधु बांधवों को इस विकट विपत्ति में धैर्य प्रदान करें। पुनः ऋषि दयानन्द के सिपाही बन वेद की ज्योति की समिधा बने।

– श्रीमती इन्दु पुरी, मैनेजिंग ट्रस्टी, देवीदास केवलकृष्ण चैरीटेबल ट्रस्ट, मोगा

आर्य समाज महाराजपुर द्वारा पारित शोक प्रस्ताव

राष्ट्रीय बंधुआ मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान क्रांतिकारी स्वामी अग्निवेश जी का दिनांक 11 सितम्बर, 2020 को निधन हो जाने पर आर्य समाज महाराजपुर में शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें सभी उपस्थित सदस्यों ने दो मिनट खड़े होकर दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की और दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की। शोक सभा में उपस्थित आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री जयनारायण आर्य ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वामी अग्निवेश जी ने पीड़ित मानवता के कल्याण हेतु समाज में व्याप्त पाखण्ड, अंधविश्वास और कुरीतियों को समूल जड़ से नष्ट करने का प्रयास किया। हम सभी को उनके कृतित्व और व्यक्तित्व से शिक्षा लेते हुए आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाना है, उनके प्रति यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। आर्य समाज के उपप्रधान श्री दयाराम आर्य ने कहा कि स्वामी जी ने आर्य समाज की ओ३म् पताका समस्त संसार में फैलाने का प्रयास किया। स्वामी जी ने हरियाणा सरकार में शिक्षा मंत्री के पद पर रहकर शिक्षा जगत को नई दिशा प्रदान की। आर्य समाज के मंत्री इन्द्रप्रकाश आर्य ने कहा कि स्वामी जी आर्य समाज के निर्भीक, निडर, कर्मठ एवं साहसी नेता थे। आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के लिए सतत प्रयासरत रहते थे उन्होंने आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक सभा में प्रधान पद पर रहते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के नारे को सफल एवं सार्थक करने में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया।

श्रद्धांजलि सभा में प्रमुख रूप से श्री लखनलाल आर्य, श्री देवेन्द्र कुमार आर्य, श्री शंकरलाल आर्य, श्री चन्द्रप्रकाश प्राचार्य, श्री अरविन्द कुमार, श्री उमेश आर्य, श्री मनोज रावत, श्री सुरेशचन्द्र नायक, श्री रामस्वरूप बिंदुआ, श्री राकेश सेन, केशव, रामस्वरूप आदि ने उपस्थित होकर पूज्य स्वामी अग्निवेश जी को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान, आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी को आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश एवं विदर्भ के समस्त पदाधिकारियों तथा मध्य प्रदेश एवं विदर्भ की समस्त आर्य समाज के पदाधिकारियों एवं सदस्यों की ओर से सादर विनम्र श्रद्धांजलि

आदरणीय स्वामी अग्निवेश जी के देहावसान का समाचार पाकर समस्त आर्यजन जो उनके स्वास्थ्य लाभ की कामना कर रहे थे उनकी आशाओं पर मानों कुठाराघात हो गया। एक निर्भीक तेजस्वी व्यक्तित्व जो जीवन भर गरीबों, बंधुआ मजदूरों के लिए लड़ता रहा वह वृद्धावस्था और अस्वस्थता से लड़ता हुआ ईश्वर की व्यवस्था के अनुरूप अपनी नश्वर देह को त्याग कर मोक्ष मार्ग के रास्ते पर चला गया।

जो भी इस संसार में आया है उसे एक न एक दिन तो जाना ही है। अब आगे कर्म ही उसके कल्याण का मार्ग बनाते हैं और जिसे ईश्वर की व्यवस्था के अनुसार जीवात्मा को स्वीकार करना ही होता है। जो उसके प्रिय जन उसकी स्मृतियों को सहेजते रह जाते हैं वे मात्र दिवंगत की आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश एवं विदर्भ के समस्त पदाधिकारियों तथा मध्य प्रदेश एवं विदर्भ की समस्त आर्य समाज के पदाधिकारियों एवं सदस्यों की ओर से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान स्वामी अग्निवेश जी को सादर भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

हम सभी प्रार्थना करते हैं कि स्वामी आर्यवेश जी, प्रो. विट्ठलराव जी तथा स्वामी अग्निवेश जी के समस्त अन्तरंग मित्रों के जीवन में इस अचानक आये हुए अभाव के दुःख को सहन करने की शक्ति ईश्वर प्रदान करें।

– प्रभा शंकर तिवारी

शोक प्रस्ताव

स्व. स्वामी अग्निवेश जी महाराज मानव जमात में रहने वाले महामानव थे, वे दुनिया को एक परिवार मानते थे उन्होनें हर प्रकार की सीमाओं को तोड़ दिया वे एक मानव परिवार के पक्ष धर थे। देशों की सरहदों को वे मिटाने की बात करते थे कोई भी मनुष्य कहीं भी रहे आये जाये। कितनी ऊँची सोच थी स्वामी जी की वे निसंदेह महापुरूष थे, हर तरह के भेदभाव को मिटाने के लिए वे जीवन पर्यन्त कार्य करते रहे। मैं मानता हूँ मुझ जैसे कवि या लेखक के पास भी उनके कार्यों का उल्लेख करने के लिए भी शब्द कम पड़ जाएंगे, कलम की स्याही कम पड़ जाएगी, इतना कार्य उन्होनें जीवन पर्यन्त किया, धर्म की सच्ची परिभाषा स्वामी जी ने दुनिया को बताई वे विश्व शांति दूत थे।

अब आज स्वामी जी हमारे बीच नही हैं तो हमारा कर्त्तव्य बनता है उनके कार्यों को हम आगे बढ़ायें, यही स्वामी जी के लिए हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

– हंसराज भारतीय, दमदमा, गुरूग्राम(हरि०), संयोजक – संत पीरूशाह मानव सेवा संस्थान

शोक प्रस्ताव

भारतीय आर्य सन्त परम्परा के क्रान्तिकारी, जुझारू सन्त स्वामी अग्निवेश जी महाराज का जीवन समाज में फैली हुई कुरीतियों, आडंबरों , अत्याचारों और रूढ़ीवादिताओं के खिलाफ था। वो समाज में समानता, सर्वधर्म सद्भाव, शान्ति, समन्वय, एकता लाना चाहते थे। उन्होंने आंदोलनों के माध्यम से सती प्रथा, मन्दिरों में शूद्रों पर लगे प्रतिबंध आदि के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद कर उनके लिए मन्दिरों के द्वार खोले। वो प्रखर वक्ता, विद्वान , विचारक एवं समाज सुधारक थे। उनके आकस्मिक निधन से सन्त समाज की ही नहीं बल्कि सारे विद्वत जगत की अपूर्णीय क्षति हुई है।

हमारा उनके साथ डेढ़ दशक से आत्मीय संबंध था और उनके साथ मिलकर सर्व धर्म सद्भाव, शान्ति, समन्वय, एकता के लिए अनेक कार्यक्रम किए। आचार्य सुशील आश्रम की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि .... ।

– विश्व विख्यात आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज के परम शिष्य विवेक मुनि महाराज

स्वामी अग्निवेश जी को विनम्र श्रद्धांजलि

महान विचारक एवं समाजसेवी जिन्होंने बंधुआ मजदूरों को उनके जीवन का अधिकार दिलाने के लिए जीवनभर संघर्ष किया और समाज से बंधुआ मजदूरी के कलंक को समूल जड़ से नष्ट करने का प्रयास किया। ऐसे महान व्यक्तित्व स्वामी अग्निवेश जी का दिल्ली में लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया। शिवपुरी में उनके द्वारा बंधुआ मजदूरी से मुक्त हुए परिवारों के ग्राम नहरसी दयानन्द चैरिटेबल में स्वामी अग्निवेश जी के निधन पर एक शोक सभा का आयोजन किया गया। जिसमें बंधुआ मुक्ति मोर्चा के जिला संयोजक गफ्फार खान चिकित्सालय प्रबन्धक, सरदार हरभजन सिंह, चिकित्सक गोपाल शर्मा, समाजसेवी शिवशंकर शर्मा, धर्मेन्द्र सिंह, कप्तान सिंह ने स्वामी जी के साथ बिताये समय को अमूल्य समय बताया तथा उन्हें हृदय से श्रद्धांजलि अर्पित की, गफ्फार खान ने कहा कि स्वामी जी के बताए रास्ते पर चलना ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

– बंधुआ मुक्ति मोर्चा, शिवपुरी

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना के समस्त अधिकारियों व सदस्यों द्वारा शोक व्यक्त किया जाता है कि परम पूज्य स्वामी अग्निवेश जी महाराज का गत दिनों पूर्व देहान्त हो गया हैं। स्वामी जी का हमारी आर्य समाज से बहुत लगाव था, हमारे आर्य समाज से उनका बहुत स्नेह था। वह आज भी हमारे आर्य समाज के हर सदस्य के दृश्य में विराजमान है। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

– सन्त कुमार आर्य, प्रधान

दो दिवसीय सत्य सनातन वैदिक धर्म समारोह, वैदिक ज्ञान आश्रम, यमुनानगर के संस्थापक स्वामी सच्चिदानन्द जी सरस्वती के सानिध्य में सफलतापूर्वक संपन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य नेता स्वामी आर्यवेश जी के यमुनानगर पधारने पर समस्त आर्यों की ओर से केंद्रीय आर्य युवक परिषद् के जिला अध्यक्ष डॉ. सौरभ आर्य ने किया 'आर्य अभिनंदन सम्मान'

सत्य सनातन वैदिक धर्म समारोह यमुनानगर में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य नेता, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी व वैदिक संन्यासी स्वामी सच्चिदानंद जी सरस्वती का आर्य अभिनंदन करते हुए केंद्रीय आर्य युवक परिषद के पदाधिकारियों के साथ जिलाध्यक्ष आर्य रत्न डॉ. सौरभ आर्य

यमुनानगर, हरियाणा। वैदिक ज्ञान आश्रम यमुनानगर के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी सच्चिदानंद सरस्वती जी के सानिध्य में आर्य केंद्रीय सभा यमुनानगर के तत्वावधान में अमन पैलेस यमुनानगर में दो दिवसीय सत्य सनातन वैदिक धर्म समारोह सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। समारोह में यशस्वी आर्य नेता एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश मुख्यअतिथि एवं मुख्यवक्ता के रूप में पधारे और अपना ओजस्वी उद्बोधन देकर सभी का मार्गदर्शन किया। समारोह में केंद्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय सहमंत्री एवं जिला अध्यक्ष आर्य रत्न डॉ. सौरभ आर्य के नेतृत्व में परिषद के आर्य पदाधिकारियों जयदेव आर्य, भजनोपदेशक राजकिशोर आर्य, अमित वर्मा, सतीश सोनी ने स्वामी आर्यवेश जी को अंग वस्त्र पहनाकर व आर्य अभिनंदन सम्मान भेंट कर उन्हें सम्मानित किया और यमुनानगर पधारने पर सभी आर्य संस्थाओं की ओर से अभिवादन व्यक्त किया।

समारोह में भजन उपदेशक भूपेंद्र आर्य खतौली उत्तर प्रदेश, सुभाष आर्य, पुष्पा चुघ, संगीता आर्य दिल्ली, गीता आर्य राजपुरा, राजकिशोर आर्य किशनपुरा ने महर्षि दयानंद व वैदिक संस्कृति से जुड़े भजन प्रस्तुत करके सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। समारोह में मंच का संचालन प्रिया आर्या करनाल ने किया तथा भाजपा के जिलाध्यक्ष राजेश सपरा ने समारोह में पहुंचकर सादगीपूर्ण शुभकामनाएं व्यक्त की।

समारोह को संबोधित करते हुए मुख्यवक्ता एवं अंतर्राष्ट्रीय आर्य नेता स्वामी आर्यवेश जी ने कहा की आर्य वैदिक संस्कृति, सभ्यता व संस्कार सर्वाधिक प्रमाणिक व सर्वश्रेष्ठ जीवन पद्धति है जिससे जुड़ने व जोड़ने के लिए हमें सदा उत्साहित होने के साथ–साथ प्रेरित भी करना है तभी हम परिवार, समाज, देश को आदर्श बना सकते हैं। उन्होंने आर्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों से आग्रह करते हुए कहा कि वह संस्थागत रूप से समय–समय पर इस प्रकार के आयोजन अपने परिवारों व संस्थाओं में आयोजित करते रहें ताकि घर–घर में आर्य व वैदिक विचारधारा से जोड़कर सभी अपना मर्यादित जीवन जीने की कला को सीख सके। उन्होंने कहा की आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती के उपकारों को देश ही नहीं पूरा विश्व सदा सर्वदा स्मरण करते हुए उन्हें नमन करता रहेगा क्योंकि उन्होंने देश ही नहीं दुनिया के लोगों को सत्य को स्वीकार करने, अंधविश्वास, दिखावा, पाखंड को जड़ से खत्म करने, वैदिक सिद्धांतों को अपने आचरण व्यवहार में धारण करके वास्तविक जीवन जीने की जो मिसाल प्रस्तुत की वह कभी भुलाई नहीं जा सकती। उन्होंने सभी आर्य श्रोताओं का आभार व अभिवादन व्यक्त करते हुए अपना साधुवाद दिया।

सम्मेलन को सफल बनाने में सर्वश्री के.सी. ठाकुर, सतबीर कंबोज, तारावती सैनी तृप्ता जेटली, नरेंद्र कुमार आर्य, नीलम ग्रोवर आर्य, फतेहचन्द वर्मा आदि आर्यों ने अपनी अमूल्य सेवाएँ दी।

– डॉ सौरभ आर्य, जिला अध्यक्ष यमुनानगर एवं राष्ट्रीय सहमंत्री (मीडिया विंग), केंद्रीय आर्य युवक परिषद, मो.:–9813739000

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

टिटौली, रोहतक, हरियाणा में हुआ यज्ञ व बुजुर्गों का सम्मान

युवा केन्द्र समिति (रजि0) द्वारा गांव टिटौली में बौदा ठौला वाले जोहड़ पर सुख समृद्धि के लिए वैदिक रीति से यज्ञ करवाया गया। यज्ञ में मुख्य अतिथि भाई अनिल हुड्डा जी रहे। वे मुख्य यज्ञमान भी रहे। भाई अनिल हुड्डा जी ने युवाओं को संबोधित करते हुये नशे व अन्य बुराईयों से दूर रहकर समाज कल्याण के कार्यों में भागीदारी की बात कही। उन्होंने युवाओं को खेलों व स्वास्थ्य के बारे में जानकारी दी।

इस मौके पर खेल स्टेडियम को बनाने व खेल एक्टिविटी शुरू करने के लिए अनिल हुड्डा ने 1,11,000/– रूपये की सहयोग राशि दान स्वरूप प्रदान की। इस राशि से युवा केन्द्र समिति द्वारा जोहड़ पर युवाओं के दौड़ने के लिए ट्रैक, कबड्डी ग्राउंड, पीने के पानी की व्यवस्था व अन्य जरूरी कार्य पूरे करवाये जाएंगे।

इस अवसर पर गांव के बुजुर्गों का सम्मान युवा केन्द्र समिति व अनिल हुड्डा द्वारा किया गया। सम्मान के रूप में वृद्धावस्था का सहारा डोगा भेंट किया गया। पूरे कार्यक्रम का संचालन कृष्ण आर्य ने किया। इस अवसर पर अतिथियों का स्वागत भी किया गया। इस मौके पर बौदा ठौला के प्रतिष्ठित व्यक्ति सर्वश्री आर्य जिले सिंह, दरिया कुंडू, देवराज कुंडू, राजबीर कुंडू, दिलबाग कुंडू, जगत पंडित, तकदीर आर्य, नरेश आर्य, मनीष आर्य, जयवीर, रोहित, धर्मेन्द्र व युवा केन्द्र समिति टिटौली (रजि0) के सभी युवा साथियों सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

– कृष्ण आर्य, मो.:–9416572574

।।ओ३म्।।
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य
(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)
(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

मात्र 3100/– में

एक वेद सैट मात्र 3100/– रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर
लागत मूल्य में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 • दूरभाष :– 011–23274771

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।